लल्लू चोर

एक बुन्देली लोककथा

एक डुकरिया को एक मोड़ा हतो – लल्लू। अकल से थो बुद्धू। बो दिन भर आबारा घूमत थो। एक बार घूमत-घामत पोंहच गओ जंगल में। उते आम के पेड़ पे चढ़के आम तोड़ के खान लगो। इत्ते में बाने देखो, चार जने आके पेड़ के नीचे बेठ गए। लल्लू ध्यान से बिनकी बात सुनन लगो। बे चारई चोर हते। ओर चोरी करबे की बतिया रये थे। इत्ते में लल्लू की जेब से एक बड़ो-सो आम एक चोर के मूड़ पे टपक गओ। चोर उतई बेहोंस हो गओ। तीनई चोरों ने घबराके ऊपर देखो तो पेड़ पे बेठो लल्लू दिखो। लल्लू ने बिनसे कई, "अभे तो मेंने एकई हे मारो हे। तुम चोरी करत हो जा बात राजा साब से केहूँ।" चोर डर गए। बे लल्लू के हाथ-पाँब जोड़न लगे। बे बोले, "भइया, तू हमसे जो चाहे ले ले, बस राजा साहब से जा बात मत कईये। बे हमें फाँसी पे लटकबा देहें।" लल्लू ने कई, "मेरी अम्मा मोसे गुस्सा रहत हे के में कछु करत-धरत नई हूँ। ऐंसो करो, मोहे भी तुमरे संगे कर लो।" चोर मान गए।

आधी रात में बे लोग एक घरे चोरी करबे गए। लल्लू चोरों से बोलो, "भइया, मेंने पहले कभ्भऊँ तो चोरी करी नई, जा बताओ, जा घर में से चुरानो का हे?" चोरों को सरदार बोलो, "भारी-भारी सामान चुरानो। बाको मतलब थो-जेबरों में से महँगे और भारी-भारी गहने चुरानो।" बे घुस गये, घर में चोरी करबे। चोर महँगो सामान ढूँढ़-ढूँढके गठरियों में बाँधन लगे। लल्लू हे घर के एक कोने में चकिया को एक पाट मिल गओ। बाने उठाके देखो बो भोत भारी थो। लल्लू खुस हो गओ। बाने सोची, भोतई अच्छो सामान मिलो हे। बो चकिया के पाट हे कंधा पे धरके गाओं के बाहर चबूतरा पे धर आओ। और बापस आके चोरों से खुसी-खुसी बोलो, "मैंने बहुतई भारी सामान चुराओ हे। जल्दी चलो तुम लोगों हे दिखा दऊँ।" चोरों ने समझी, लल्लू के हाथ तिजोरी लग गई हे। बिनने सब गठरिएँ उतईं पटकीं और लल्लू के साथ भगत-भगत चबूतरे पे पोंहचे। उते बिनने तिजोरी की जगह चकिया को पाट देखो। वे भोतई गुस्सा भए। बे मिलके लल्लू हे मारन लगे। लल्लू चिल्ला-चिल्लाके कहन लगो, "मूरख हुओ तुम लोग, तुमने जैंसी कई बेंसई मैंने भारी सामान उठाओ हे। में तुमरी सिकायत राजा साब से कर देहूँ।" चोर फिर डर गए, हाथ जोड़ के बोले, "तेरे हल्ला में गाओं बारे जग जेहें। अब चुपचाप इते से भग लईयें। जामें हमरी भलाई हे।"

कछु दिना बाद, फिर चोर एक घर में चोरी करबे पोंहचे। घर में घुसबे के पहले लल्लू ने उनसे कई, "अभईं, बता दो कोन-सो सामान चोरी करनो हे?" चोरों को सरदार बोलो, "कोई भी सामान चोरी करबे के पहले ठीक से ठोंक-बजा के देख लेनो।" बाको मतलब थो, सामान हे देख-परख के चोरी करनो। बे घुस गए घर में चोरी करबे। चोरों हे तिजोरी मिल गई, बे बाहे खोलन लगे। इत्ते में लल्लू के हाथ में दिबाल पे टँगी कछु चीज़ आ गई। बाने सोची जाहे चुराबे के पहले ठोंक बजाके देख लऊँ। बा थी ढोलकी। जेंसई लल्लू ठोंकन लगो, बाको ऐरो सुनके घर बाले जग गए। सब चिल्लान लगे, "पकड़ो-पकड़ो, भड़िया हे पकड़ो!"

सबरे चोर अपनी जान बचाके आगुड़-बागुड़ कूद फाँद के भागे। अपनी मिलबे की जगह पोंहचे। कोई के उन्नहा फट गए थे, कोई खबना में खब गओ थो, कोई के पाँओं में काँटे गड़ गए थे। सबरे मिलके लल्लू पे गरम होन लगे। लल्लू ने कई, "एक तो में सरदार को बताओ काम कर रओ हूँ और ऊपर से तुम लोग मोहे आँख बता रए हो? में अभई जाके राजा से सिकायत करत हूँ।" चोरों ने कान पकड़े बोले, "माफ करो मूरख राज।" बिनने आपस में सलाह करके कई, "लल्लू भाई, अब हम जिते भी चोरी करबे जाहें, उते तुम्हें कछु भी चोरी करबे की ज़रूरत नई हां। बस तुम साथ रहियो।"

अबकी बेर रात में, बे एक डुकरिया के घर चोरी करबे घुसे। चोर माल ढूँड़न लगे। लल्लू ने देखो चूल्हे पे खीर चुड़ रई हे। उतई दिबाल से टिकके डुकरिया सो रईहे। असल में खीर बनात-बनात डुकरिया ऊँघन लगी थी। लल्लू थरिया में खीर लेके खान लगो। बीच-बीच में डुकरिया हे भी देखत जाए। के डुकरिया जग तो नई रई। इत्ते में डुकरिया हे जँभाई आई। बा नींद मेंई एक हाथ मों के पास ले गई। लल्लू हे लगो डुकरिया इसारे से कह रई हे, "मेरे मों में खीर डाल दे।" लल्लू ने एक करेछली गरम खीर डुकरिया के मों में डाल दई। डुकरिया को मों बर गओ। बा जोर-जोर से चिल्लान लगी। हल्ला सुनके गाओं बारे आ गए। चारई चोर घर के चार कोनों में लुक गए। लल्लू ऊपर पटमा पे लुक गओ। गाओं बारों ने डुकरिया से पूछी, "तेरे मों में गरम खीर कोन ने डार दई?" डुकरिया बोली, "मोहे कछु नई मालुम भइया! ऊपर बालो जाने...? मेरो तो मों बर गओ, आग लगे ऊपर बाले में।" लल्लू ने सोची डुकरिया मेरिई-मेरिई कह रई हे, बासे सहन नई भई बो बोल उठो, "जब से मेरिई-मेरिई कह रई हे डुकरिया! जे चारई कोने में लुके हें इनकी कछु नई कह रई।" गाओं बारों ने पटमा पे से लल्लू हे ओर चारई कोनों में से चारई चोरों हे पकड़ लओ ओर खूब मरम्मत करी।

(इस बुन्देली लोककथा का संकलन रामभरोस शर्मा और सम्पादन प्रदीप चौबे ने किया है।)

मोड़ा- लड़का, बाने- उसने, मूड़- मुँडी, ऐरो- आवाज़/आहट, चुड़ना- पकना, बरना- जलना, भड़िया- चोर, मों- मुँह, उन्नहा- कपड़े, खबना- कीचड़।

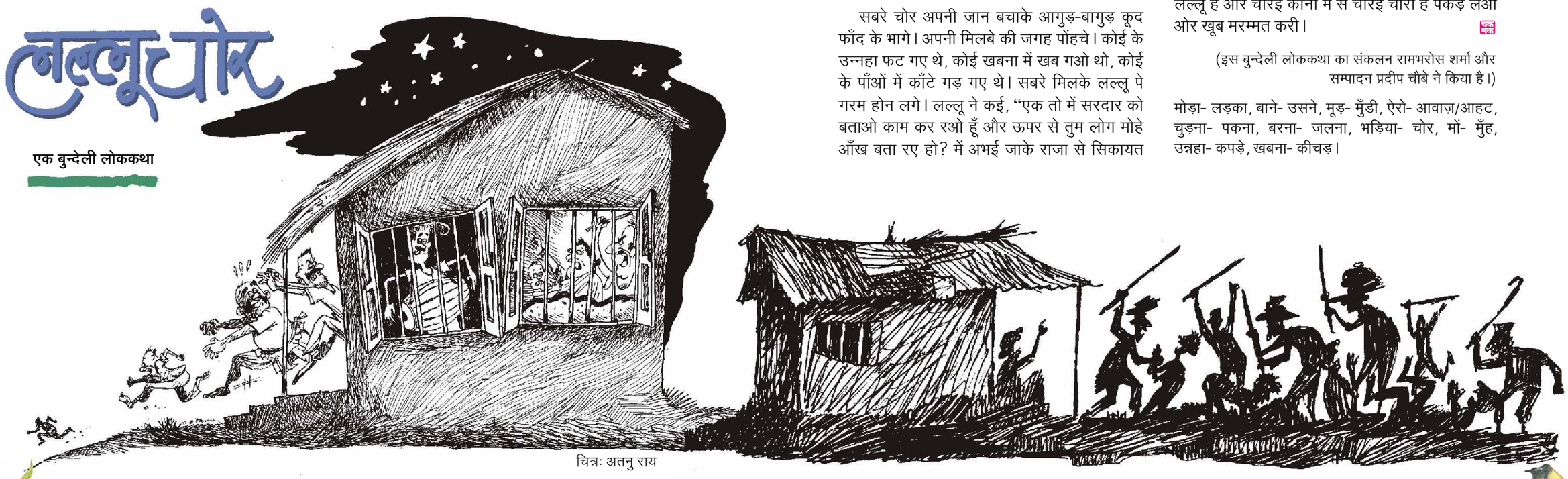

चित्रः अतनु राय